# विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

## शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत

वर्ग सप्तम

दिनांक 21 मई 2020

राजेश कुमार पाण्डेय

प्रथम: पाठ:(सत्यस्य महत्वम्)

शब्दार्थ

| संस्कृत | हिन्दी | संस्कृत | हिंदी |
|---|---|---|---|
| आकर्ण्य | सुनकर | मूर्हिन | सिर पर |
| मुदितेन आचार्य द्रोणेन | प्रसन्न आचार्य द्रोणे द्वारा | मार्गदर्शिका | रास्ता दिखाने वाली |
| संयोजितम् | ज्ञात हुआ | कण्ठीकृतः | याद कर लिया |
| आचरणम् | व्यवहार | स्मरणीय | याद रखना चाहिए |
| शिक्षापदा् | शिक्षा देने वाला | समागतः | आए |
| ऐतवलोक्य | यह देखकर | पाठितवन्त | सबने पढ़ लिए |
| भृशम् | बहुत अधिक | मन्बुद्धिः | मूर्ख |
| उत्तराधर्म | दूरे भाग को | | |

प्राचीन काले शिक्षायाः आधारः गुरु–शिष्य परम्परा आसीत्।

प्राचीन काल में शिक्षा का आधार गुरु -शिष्य का परंपरा था।

पञ्च वर्षं वयः पश्चात् शिष्याः गुरूम् आश्रमे अगच्छन्।

5 वर्ष उम्र हो जाने के बाद शिष्य गुरु के आश्रम में जाता था।

ते तत्र पञ्चविंशति वयः यावत् शिक्षां गृहणन्ति स्म।

वे लोग 25 वर्ष की उम्र तक शिक्षा ग्रहण करते थे।

शिष्याः एवं विश्वासं कुर्वन्ति यत् ये छात्राः वा शिष्याः यादृशम् श्रद्धाभावेन गुरूम् सेवां करिष्यन्ति ते तादृशम् एव सफलतां प्राप्तष्यन्ति ।

शिष्य भी विश्वास करते हैं कि जो छात्र और छात्राएं जैसा श्रद्धा भाव से गुरु का सेवा करते हैं वह वैसा ही सफलता प्राप्त करते हैं।

रामायणे महाभारते गुरूः महत्वं सर्वे जानन्ति।

रामायण ,महाभारत में गुरु का महत्व सभी जानते हैं।